सीताराम

सीताराम

सीताराम

सीताराम

सीताराम

सीताराम

❋ माधुर्य्यलीला विहारिणी विहारिणौ विजयेते ❋

श्री

रसमोदलीलामृत

सम्पादकः-

शत्रुहनशरण

प्रकाशकः-

श्रीरामप्रियाशरण 'पंजाबी'

प्रथमावृत्ति ५०० | निछावर प्रेम पाठ और
श्रीरामनवमी, सं० २०२८ | मानसिक भावना।

सीताराम

सीताराम

❀ माधुर्य्यलीला विहारिणी विहारिणौ विजयेते ❀

श्री

रसमोदलीलामृत

सम्पादकः—

शत्रुहनशरण

प्रकाशकः—

श्रीरामप्रियाशरण 'पंजाबी'

प्रथमावृत्ति ५००
श्रीरामनवमी, सं० २०२८

निछावर प्रेम पाठ और
मानसिक भावना।

सीताराम

श्रीरसमोद कुञ्ज विहारिणी विहारिणी विजयेते

भूमिका

"यो भाविको भावयते हृदाब्जे-
रामस्य रासो रसवारि पूर्णः।
पिबेच्च सत्सार सुधाधिकं रसं-
न रोचते क्षार जलं यथाकिल ॥"

(श्रीहनुमत्संहिता)

अर्थात् मानसिक भावना करने के अभ्यासी भावुक महानुभाव, जब दिव्य रस परिपूर्ण श्रीरामरास का अपने हृदय में ध्यान करने लगते हैं, तो उन्हें रस भावना में सुधा सार रस पान करने के समान अपार स्वाद एवं स्वस्वरूपानुरूप मधुरा रति की पुष्टि एवं दिव्य रस पिपासा की तुष्टि प्रतीत होने लगती है। इस रास भावना जन्य परमानन्द सुधा के आगे, उन्हें अपर कर्म धर्म की कथा खारे जल के समान अरुचिकर लगता है।

भावना सिद्ध रसिकाचार्यों की समाधि-भाषा में लिखी गई महावाणी साक्षात शब्द ब्रह्म ही हैं। प्रारंभिक भावुकों के लिये ये महावाणियाँ भावना की आधार-भूमि बन जाती हैं।

ध्यान पथ में दिव्य बिहार देश का प्रकाश भी इन्हीं वाणी-प्रभाकर द्वारा होता है। इस अतुल उपकार के आभार में भावुकों का हृदय रसिकाचार्यों के श्रीचरणों पर निछावर होकर लोट पोट होने लगता है।

प्रस्तुत प्रबन्ध श्रीरसमोद लीलामृत उसी कोटि के शब्द ब्रह्म हैं। 'गेन्द केलि विहार' एवं 'श्रीप्रिया प्रियतम रसमोद माला'—युगल दृश्य काव्यों से कलित ये ललित लीलाएँ सहृदय सज्जनों के हृदय हार बनकर, उनके रसज्ञ उरस्थल को विभूषित करेंगी, ऐसा हमारा बिश्वास है।

गेन्द केलि विहार की लीला सं० १६८८ में अथरीरानी श्रीसियाकिशोरी सहचरी के तत्वावधान में अथरी मन्दिर में हुई थी। इसकी संक्षिप्त चर्चा श्रीरसमोद चरितामृत के पृ० १६२ में हो चुकी है। झाँकी मंडली के द्वारा अभिनय कराना था। अतः दृश्य काव्य का साङ्गोपाङ्ग रूपक न देकर प्रबन्ध रचयिता ने इसमें संक्षेप रूप से गेन्द क्रीड़ा का विवरण देकर, सरस सम्वादों की योजना की है। गेन्द केलि में श्रीप्रियाजी के सौकुमार्य, लालित्य, चापल्य आदि आङ्गिक उद्दीपन सौष्ठव, श्रीप्राणप्रियतम जू की आस्वाद्य मधुरारति को विशेष रसनीय बना देते हैं। दूसरे प्रबन्ध 'श्रीप्रियाप्रियतम रसमोद माला' में सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला जू के वीणवादन चातुर्य्य के साथ साथ उनके द्वारा किये गये श्रीप्रिया मान विवर्द्धन का सफल प्रयास चित्रण किया गया है।

इसका अभिनय हमारे श्रीगुरुदेव श्रीकोठेवाले सरकार

ही की प्रेरणा से श्रीसद्‌गुरुसदन के तत्कालीन महान्त रसिक-मणि श्रीपुरुषोत्तमशरणजी महाराज के तत्वावधान में श्रीसद्‌-गुरु सदन के जगमोहन में सं० १९९३ चैत्र कृष्ण ३, मंगलवार के दिन हुआ था।

श्रृङ्गार रसानुरूप नायिका का रूपोत्कर्ष, गुणोत्कर्ष एवं प्रेमोत्कर्ष ही नायक के लिये विशेष रसानन्द सम्वर्द्धक होते हैं। हमारे पूज्यपाद श्रीगुरुदेव ने अपने इन उभय प्रबन्धों में इन सामग्रियों का यथेष्ट समावेश कर श्रृङ्गार रस की परिपूर्ण निष्पत्ति कर दी है; क्योंकि दृश्य काव्य के प्राण प्रति-पाद्य रस का परिपाक ही माने जाते हैं।

श्रीगुरुदेव की सत्कृतियों को प्रकाश में लाने का अधिकांश श्रेय गुरु बन्धु श्रीरामप्रियाशरणजी पंजाबी को है, जिनके समस्त आर्थिक सहयोग से यह ग्रन्थ रत्न प्रकाशित होकर, रसिक जगत को एक अमूल्य निधि प्रदान कर रहा है।

श्रीनृपनन्दनशरणजी के प्रोत्साहन प्रदान एवं उन्हीं के प्रेस में दौड़ धूप लगाने एवं प्रूफ संशोधन में अधिक सहयोग देने से, यह प्रकाशन कार्य सफल हो पाया है। अतः आप भी धन्यवाद के पात्र हैं।

श्रीरसमोद कुञ्ज
श्रीरामनवमी, सं० २०२८

श्रीमती रसमोदलता
पादारविन्द मिलिन्द
शत्रुहनशरण

प्रस्तुत ग्रन्थ में आये हुये पदों के राग निर्णय

❋ गेन्द केलि विहार ❋

क्र०	पृ०	पद शीर्षक	राग का नाम
१	६	जू प्यारे मैं तो काको कहूँ न्यूनाधीक-	राग कल्याण

श्रीप्रिया प्रियतम रसमोद माला

क्र०	पृ०	पद शीर्षक	राग का नाम
२	१२	क्या मन माँह बिचारी री प्यारी-	शुद्ध कल्याण
३	२०	लली तोहि कल न परै बिनु देखे-	राग कामोद
४	३४	महारस भीनी रंग भरी जोरी-	राग सोरठ
५	३४	सुन्दर सुभग सलोनी श्रीसिय-	राग सूहा
६	३५	मोहत मन मनसिज सरकारी-	रागिनी सुघरई
७	३५	सुभग सिंहासन आसन नव छवि-	राग केदारा
८	३६	पिय के नैन प्रिया छवि उरझे-	रागिनी बहुली
९	३३	सदा चिरजीवो रंग भरी जोरी-	राग देश

उपर्युक्त राग रागिनियों का निर्णय गायनाचार्य श्रीमैथिली-रमणशरण (श्रीमहाबीरदास) जी ने कृपा पूर्वक किया है। एतदर्थ आप धन्यवादार्ह हैं।

शुद्धाशुद्ध तालिका

...ोद केलि विहार ❋

पृ०सं०	पं०सं०	अशुद्ध	शुद्ध
११	१८	जैसे, छवि गृह...करने वाली हुई। यह वाक्य धोखे से दो बार छप गया है। एक को उठा दीजिये।	
१४	८	पवम	प्रथम
१५	८	सा	सो
१६	१३	प्यारे	प्यार
१७	६	प्यारीजी तो	प्यारीजी ने तो

❋ श्रीप्रिया प्रियतम रसमोद माला ❋

पृ०सं०	पं०सं०	अशुद्ध	शुद्ध
८	१८	कार्थ	कार्य
११	१६	लावोंगा	लावोंगी
१२	४	हे श्रीप्यारा जू	हे श्रीप्यारी जू
१३	६	राकन	रोकन
१७	११	कोटिन किय	कोटिन किये
३३	१६	दाउन	दोउन
३७	५	सवस	सर्वस

❀ श्री कनक महल विहारिणी विहारिणौ विजयेते ❀

❀ गेन्द केलि विहार ❀

❀ मङ्गलाचरण ❀

(सामाजिकों द्वारा गान)

* सोरठा *

वन्दौं गुरु परमेस, जिन की महिमा को कहे ।
थके गनेस महेस, सारद सेस रमेस जुत ॥ १ ॥

* दोहा *

जिन की पद-नख-प्रभा से, हृदय सु होत प्रकास ।
नसत तिमिर सूझत हिये, सिय पिय विपिन विलास ॥ २ ॥
वन्दौं चन्द्रकला अली, सकल सखिन सिरमौर ।
कृपा दृष्टि करिये हिये, सूझै रहस हिलोर ॥ ३ ॥
वन्दौं चारुसिला अली, रूप गुनन की खान ।
करुना करि हिय में बसो, उपजावहु रस ग्यान ॥ ४ ॥
वन्दौं जानकि जान पद, सखिन सहित रस रास ।
नृत्य कला दरसाइ कै, सब विधि पुरवहु आस ॥ ५ ॥
वन्दौं श्री मन्मारुती, रसिकन के सिरताज ।
दया दृष्टि मो पै करौ, सरसावहु रसराज ॥ ६ ॥
रास ध्यान करिये सदा, सकल रसन गंभीर ।
'रामसखे' करि परन कुटि, बसि सरजू के तीर ॥ ७ ॥

(यवनिका उठती है । श्रीकनकमहल सिंहासन पर श्रीयुगलकिशोर जू छत्र चँवरादि युक्त सखियों से परिवारित विराजे हैं)

* व्यास गान दोहा *

हेम महल के कुञ्ज में, करि विहार सिय लाल ।
चले गेंद के चौक में, सखियन युत मुद माल ॥

(सेवा सौज लिये सखियों से परिसेवित श्रीयुगलकिशोर का परदे से बाहर गेन्द चौक में पधारना)

[गेन्द चौक में प्रवेश । सिंहासन पर श्रीयुगल मनहरणलाल जू का विराजना । सेवा सौज युक्त सखियों के सहित युगल झाँकी वर्णन ।

* व्यास द्वारा दोहा गान *

कोइ चामर कोइ छत्र लिय, अतरदान लिय कोइ ।
पानदान पिकदान लिये, व्यजन लिये सुभ कोइ ॥
कोइ दरपन सतरंज लिये, कोइ कुसुमन नव माल ।
कोइ चौसर गंजीफ लिये, कोइ रतनन की माल ॥

(गेन्द चौक का वर्णन व्यास द्वारा गान)

* सोरठा *

महल वहुल छविमान, जरे जरायन जगमगे ।
तने घने सु वितान, परदा बने बिछावने ॥

* दोहा *

सींचे विविध सुगन्ध नव, मुक्ता वन्दनमाल ।
चहुँ दिसि अगनित नगन जुत, बने झरोखा जाल ॥

सुन्दर गादी गेड़ुवा, विविध खेल के साज ।
जुगल चरन सेवैं तहाँ, प्रमुदित सखी समाज ॥
इहि विधि गेन्द सु चौक में, आय दिये गलबाँह ।
सखिन सहित कुंजेश्वरी, पूजन लगि सिय नाह ॥
रतन जटित सिंहासने, जुगल ललन पधराय ।
धूप दीप नैवेद्य धरि, करि आरति हरषाय ॥

(श्री कुंजेश्वरी द्वारा उपर्युक्त विधि से युगल ललन की पूजा । पुनः व्यास गान)

✻ सोरठा ✻

दम्पति सीथ प्रसाद, आपस में बरताइ कै ।
सखियन जुत अहलाद, पाइ प्रेम रस में पगी ॥

✻ व्यास गान ✻

करि विनती कुंजेश्वरी, बोली बचन रसाल ।
विविध रंग के गेन्द यह, खेलिय दोउ सिय लाल ॥

(श्रीकुंजेश्वरी जी का सम्वाद—

हे श्रीयुगलललन जू, यह लीजिये । विविध रंगों के गेन्द हैं । इन्हें लेकर खेलिये ।

✻ व्यास गान ✻

सुनि विनती सखि की तबै, उठे उमगि दोउ लाल ।
निज निज जूथ बनाय कै, खेलत गेन्द रसाल ॥

(श्रीयुगलकिशोर अपने अपने पक्ष की सखियों को लेकर दो तरफ हो जाते हैं। कर कंजों से गेन्द को एक दूसरे की ओर उछालते हैं। आगे के दोहे व्यास गाते जायेंगे, युगलललन जू तदनुरूप लीला करेंगे।)

* चौपाई व्यास गान *

खेलन लगे गेन्द दोउ मिलिकै। छाती तान चलावत हँसिकै
झमकि झमकि दोऊ दल दौरे। नूपुर सब्द पूरि चहुँ ओरे ॥
अति लाघवता करि सिय प्यारी। खेलन गेंद कला चित धारी
प्रीतम की सीमा से बाहर। पुनि पुनि करत गेन्द ताड़न कर
सिय की ओर चलावत प्रीतम। बीचहिं रोकि लेति हैं हरदम
प्रीतम बहु विधि करि चतुराई। बहुत बार सिय ओर चलाई
पिय के कन्दुक एकौ वारा। जात नहीं सिय सीमा पारा ॥
अति चंचल से ताड़त जाई। सिय चंचलता वरनि न जाई ॥
अलकैं छुटि २ मुख पै आवै। सिय निज हाथहिं दूरि हटावै
मुख पै श्रमकन अतिसय झलकै। वारिज कोस ओस जनु चमकै
गेन्द खेल में अति चपलाई। जनु दामिनि बहु छिति पै धाई
देखि पिया अति चंचलताई। पवन मनौ गति वारत जाई ॥
श्रम से तरवर होइ रहो है। तदपि न खेलन चाव गयो है।
दौरि पिया सिय कंठ लगाई। अलि प्रिये यह नहिं मोहिं भाई
जो अब ऐसो खेल करौगी। सौकुमार्य वस हानि परौगी ॥

*** दोहा ***

अस कहि प्रीतम अंक में, सिय को लइ बैठाइ।
ब्यजन करत मुख कंज पै, बहु विधि लेत बलाइ ॥

(श्रीप्रीतमजी खेलना छोड़ दौड़कर श्रीप्रियाजी को गले लगा लेते हैं, और कहते हैं। 'बस' 'बस' श्रीप्रिया जू! बहुत हुआ! अब इस खेल को समाप्त कीजिये। प्यारी, आप अति सुकुमारी हैं। अब आपको कष्ट होता होगा। ऐसा कह कर श्री प्रिया जू को गोद में बैठा लेते हैं। श्रीमुखकमल के पसीने को रूमाल से पोंछते हैं। अपने करकंज से पंखा के द्वारा पवन करते हैं और बार बार उनकी बलैया लेते हैं। तत्पश्चात् सखी गण निम्नांकित रीति से युगल परिचर्या करती हैं। व्यास गान।)

*** दोहा ***

सखि धाईं चहुँ ओर ते, सिय पिय ढिग में आइ।
दम्पति ऊपर बीजना, करन लगी हरषाइ ॥
रतन जटित सिंहासने, दोऊ को बैठाइ।
भोजन विविध कराइ के, नृत्य करी गुन गाइ ॥
पान पवावत परस्पर, करत सु हँसि हँसि वाद।
रचि रचि रुचिर प्रहेलिका, यथा सु रस मरजाद ॥

(प्रहेलिका बुझौअल)

❋ सोरठा व्यास गान ❋

हिय में भरी उछाह, श्रीविदेह नृपनन्दिनी ।
करि बिचार मन माह, पूछत भइ रघुचन्द से ॥

❋ श्रीप्रिया जू का गान, दोहा ❋

सुनहु राजनन्दन प्रिय, कमल अधो मुख सोह ।
ताके दल पंगति अहै, दल प्रति बुध पितु जोह ॥
अब्ज उपर हंसावली, तापर सरघर साज ।
तेहि ऊपर रंभा बसे, इभ रिपु तापर आज ॥
जातरूप नग ताहि पर, तापर दर सुचि राज ।
राहु-शत्रु तापर बसे, लिये शुक कमल समाज ॥
चोर सुखद तापर बसे, तापर बसे तमारि ।
दोउ दिसि मुक्ता अम्ब है, जैवात्रिक को धारि ॥

---

१ अधोमुख कमल = चरण तलुवे । दल पंक्ति = चरणां गुलियां । बुधपितु = चन्द्रमा, यहाँ नख । हंसावली = नूपुर । सरघर = तरकस, यहाँ जंघा । रंभा = कदली, यहाँ उरु । इभ = हाथी । इभरिपु = सिंह, यहाँ कटि । जातरूप = सोना । नग = पर्वत । दर = शंख यहां कंठ । राहु शत्रु = चन्द्रमा यहां मुख । शुक = नाक । तमारि = सूर्य, यहाँ चूड़ामणि । मुक्ता अंब = मोती की जननी सीपी, यहाँ कान । जैवात्रिक = चन्द्रमा, यहाँ कर्णफूल ।

तेहि दोउ दिसि अहि धाइ के, करत चंद रस पान।
हौ प्रवीन तो कहहु पिय, लेहु सुघर रस दान॥

* व्यास गान, सोरठा *

दै उत्तर रघुलाल, मन्द मन्द मुसुकाय के।
करि अनुभव रस आल, प्यारी सन पूछत भये॥

श्रीलालजी मन्द मुसकान पूर्वक कहते हैं—

हे श्रीप्रिया जू, आप ने जिन शोभन वस्तुओं के नाम गिनाये, वे सभी आप ही के कमनीय अङ्गों के उपमान हैं।

* श्रीप्रीतम जू का गान *

सुनिये राज नन्दिनी प्यारी, देखति हो नहिं प्यारि।
घन पै रवि रवि में कवि,शुक युत शशि तहँ करत विहार॥
तामे है युग कुण्ड मनोहर, सुधा सुधा कर स्वाद।
खेचर वनचर जलचर, सुख युत नित बसि रहित विवाद॥

अहि=साँप, यहाँ केश लट, कपोल पर।

घन=केश। रवि=चूड़ामणि। कवि=बृहस्पति, यहाँ बेसर। शुक=नासिका। शशि=श्रीप्रिया मुख। युगकुंड=नयन। खेचर=आकाशचारी खंजन। वनचर=मृग। जलचर=मीन। नयन की उपमा तीनों हैं।

❋ दोहा व्यास गान ❋

दै उत्तर तब पीय के, श्रीमिथिलेश कुमारि ।
प्रेम भरे रस में दोऊ, सखियन ओर निहारि ॥

श्रीप्रिया जू—हे प्राण संजीवन जू, आप वाग्विलास पूर्वक मेरे ही मुख नयन का वर्णन करते हैं।

॥ इति प्रहेलिका बुझौवल ॥

❋ रूपोत्कर्ष पर दम्पति विवाद ❋

❋ दोहा व्यास गान ❋

कोइ सखी आदर्श लिय, सन्मुख दम्पति ओर ।
निज निज मुख देखन लगे, दरसत रूप हलोर ॥

(एक सखी युगल ललन को दर्पण दिखाती है। दोनों श्रीमुख छवि देखते हैं)

❋ व्यास गान ❋

प्यारी बोली सुनहु पिय, रूप अधिक है मोर ।
पिय बोले सुनिये प्रिये, अधिक तोर से मोर ॥

❋ (क्षेपक कवित्त) व्यास गान ❋

मुकुर विलोकि कै 'विहारी' सों कहत प्यारी,
सु छवि हमारी सी तिहारी नहिं होने को।
नीको मुख मेरो फीको आप को दिखात देखो,
ह्वै रह्यो विवाद यों सलोनी औ सलोने को ॥

आप की निसाकर प्रभाकर सी मेरी प्रभा,
हेरि हिय हारौ क्यों लगे हौ लाज खोने को।
गरब न कीजै निज रूप को रंगीले रंच,
कारो रंग रावरो हमारो रंग सोने को॥

श्रीप्रियाजी—हे प्राण प्यारे, आप से मेरा रूप अधिक सुन्दर है।

श्रीप्रियतमजी—नही नही, श्रीप्रिया जू, मेरा ही रूप आप से विशेष रमणीय है।

* व्यास गान दोहा *

दोउ परस्पर वाद करि, मिटत नहीं वह स्वाद।
पिय बोले सुनु ससिकले, मेटहु विमल विवाद॥
हम सुन्दर अकि प्रिया हैं, करु तुम सुन्दर न्याय।
बोली चतुरी चन्द्रकला, मन्द मन्द मुसुकाय॥

श्रीप्रियतम जू- हे प्यारी सखी श्रीचन्द्रकले, तुम ही ठीक-ठीक न्याय कर दो कि हम दोनों में अधिक सुन्दर कौन है।

(इस पर श्रीचन्द्रकला जू मन्द मन्द मुसकान पूर्वक नीचे लिखा पद गाती हैं)

जू प्यारे मैं तो काको कहूं न्यूनाधीक॥
मेरे तो दोउ नैनन तारे, एक से एक अधीक।
पै एक बात कहति हौं सुन्दर, न्याय युक्त अति नीक॥
स्याम गौर दोउ रंग अनादी, दोउन कार्य सुनीक।

स्याम सुकारज जानु हलाहल, गौर सुकार्य अमीक ॥
एकहि पान से अमर करत है, देत मौत यक नीक ।
अपने अपने थल पर दोऊ, दरसावे गुन ठीक ॥
लाल ललो निज निज रंगन से, लेहु जानि न्यूनाधीक ।
गौर प्रकास स्याम तम वरनत, कवि जन परम सुधीक ॥

(सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला जू का वार्तिक सम्वाद)

हे श्रीमहाराज नन्दन जू. हे श्रीमहाराज नन्दिनी जू, हम किसको अधिक सुन्दर वा न्यून कहें ? क्योंकि हमारे वास्ते तो दोनों एक से एक सुन्दर हैं । परन्तु हम जो बचन कहती हैं उसी से न्यूनाधिकता आपस में विचार लिया जाय । गौर और श्याम रंग दोनों अनादि हैं । सारे श्याम रंग वाले कार्यों की उत्पत्ति के कारण वह अनादि श्याम रंग है और गौर रंग वाले कार्यों की उत्पत्ति के वह अनादि गौर कारण है । अब श्याम रंग कारण के कार्य कौन हैं ? गरल । और गौर रंग कारण का कार्य अमृत है । अर्थात् श्याम रंग गरल है और गौर रंग अमृत है । विष पान करने से प्राणी को सर्वांग विष चढ़ जाता है । वह बेसुध हो जाता है । ठग लोग विष पान करा के प्राणी का सर्व धन मूस लेते हैं । और विष पीने से प्राणी संसार से मर जाता है ।

हे प्राणनाथ आपही के सखा कवि का बचन है—

*** दोहा ***

रूप हलाहल पान जो, करि जग से मर जाय।
यह विष केर उपाय है, वह विष के न उपाय ॥
विष वारे के पास सखि, जनि बनि जाइये दूति।
'रामसखे' विष प्याइ के, तन मन लैहैं धूति ॥

(विज्ञ पुरुषों ने विष की ऐसी प्रशंसा कही है)

अमृत पान करने से सर्वाङ्ग प्रफुल्लित हो जाता है। मन में आनन्द की लहरें उठती हैं। सर्वाङ्ग पुष्ट हो जाता है। पान करने वाले अमृत पान कराने वाले को सहर्ष भेंट चढ़ाते हैं। पान करने वाले अमर हो जाते हैं। अतएव विज्ञ पुरुषों ने अमृत की ऐसी प्रशंसा की है। इसी से आपस में समझ लीजिये।

हे प्राणनाथ, पुष्प वाटिका लीला में आप ही का श्रीमुख वचन है। मानो ब्रह्मा ने अपनी सब निपुणता खर्चकर सुन्दरता को विरच कर सब से अति सुन्दर जो विश्व को प्रत्यक्ष दिखाया, वह अति सुन्दर मैं हूँ। 'ताकहँ सुन्दर करई।' अर्थात् श्रीप्यारी जी की शोभा 'ताकहँ' नाम मुझे भी सुन्दर करने वाली हुई। कैसे ? जैसे, छवि गृह को दीप शिखा प्रज्वलित करे। अर्थात् छवि गृह मैं हूँ, दीप शिखावत् श्रीराजनन्दिनी जू है। मेरी शोभा को भी आप की शोभा प्रकाश करने वाली हुई। कैसे ? जैसे, छवि गृह को दीप शिखा प्रज्वलित करे। अर्थात्

छवि गृह मैं हूं, दीप शिखावत् श्रीराजनन्दिनी जू हैं। मेरी शोभा को भी आपकी शोभा प्रकाश करने वाली हुई। कवियों ने प्राकृत दृष्टान्तों को दे देकर सब उपमायें जूठी कर दीं। एक असमनियाँ मैं था सो मैं भी-'केहि पटतरौं विदेह कुमारी' अर्थात् श्रीप्यारी जू के किसी अंग का पटतर नहीं पा सकता हूं, क्योंकि वे विदेहकुमारी हैं, और मैं ठहरा देह कुमार। अतएव मुझ से और श्रीमहाराज नन्दिनी जू से बहुत न्यूनाधिकता है। इस बचन से भी बिचार लीजिये।

*** श्रीप्रियतम जू का सम्वाद (कवित्त क्षेपक) ***

तेरो मुख मैथिली अनूप अरविन्द देखि,
मेरो मन मुग्ध भृंग सरन सचाँची है।
सौरभ-तरंग गंग धार सी बहत अंग,
भूषन बहार की अपार धूम माँची है॥
छवि छलकी सी परै सहज सिंगार की त्यों,
माधुरी हँसनि तो हमारे नैन नाची है।
शक्ति हो हमारी भक्ति भाव सो 'विहारी' कहैं,
कारे हम हारे ये तिहारी बात साँची है॥

*** व्यास गान दोहा ***

व्यंग वचन सखि के श्रवनि, विहँसे दोउ पिय प्यारि।
निज निज हार उतार के, चन्द्रकला गल डारि॥

पिय बोले सुनु शशिकले, वचन कहहु अति प्यारि।
क्यों न कहौ प्यारी सखी, यूथन में सरदारि ॥

॥ इति प्रणय विवाद ॥

(दम्पति गुणोत्कर्ष पर सखियों की उक्ति प्रत्युक्ति)

(श्रीप्रिया प्रियतम कभी परस्पर गलबाँहीं देते हैं, कभी परस्पर एक दूसरे का श्रृङ्गार सँवारते हैं, कभी एक दूसरे को पान पवाते हैं, कभी चौसर शतरंज खेलते हैं।

(व्यास गान, दोहा कथित रीति से लीला प्रदर्शन)

कबहुँ नेह के भार भरि, लपटि लटकि रहे दोउ।
छके प्रेम मादक पिये, रहत न तन सुधि कोउ ॥
कबहुँ कुँवर दोउ परस्पर, निज कर करत सिगार।
बिरी खवावत खात पुनि, बहु विधि करत विहार ॥
पुनि दम्पति खेलन लगे, चौसर अरु सतरंज।
पासा फेंकत परस्पर, दोउ बढ़ाय कर कंज ॥

❋ सोरठा ❋

खेलि दोउ रस स्वाद, पुनि बैठे गलबाँह दै।
सखिन परस्पर वाद, करन लगीं अनुराग भरि ॥

❋ दोहा ❋

प्रिय के रूप गुनादि में, दै दै हेतु विचार।
कहन लगी पिय की सखी, सिय सखि से चटकार ॥

श्रीप्रिय सखी के वचन श्रीप्यारी सखी से—

हे आली, हमारे बिचार से श्रीप्यारी जी से श्रीप्यारे के कुल, रूप, गुणादि अधिक देखने में आते हैं।

श्रीप्यारी सखी—हे सखि, इस में हेतु देव।

श्रीप्रिय सखी—हे सखि, प्रथम हेतु तो यह लेव कि श्रीप्रियतम जू का जन्म स्थान सबसे उत्तम है, क्योंकि इसमें ऋषि वचन है—"अयोध्यापुरी मस्तके।" (२) पुनः प्यारे श्रीचक्रवर्त्ती पुत्र हैं। (३) पुनः आविर्भाव में भी प्रथम हैं, क्योंकि एक मास के आगे पीछे हैं। (४) पुनः रूप में भी अधिक हैं, क्योंकि स्त्री मात्र का तो कहना ही क्या, किन्तु बड़े-बड़े ऋषियों ने, जिन सब के बार दंतादि गिर गये थे, उन्होंने भी प्यारे के रूप देख मोहित होके स्त्री होने की चाहना की। (५) पुनः प्यारे का श्याम रंग अति श्रेष्ट हैं, जिस रंग पर दूसरा रंग चढ़ता ही नहीं। (६) पुनः प्यारे का करुणा गुण देखो—सुग्रीव, विभीषणादि किस दशा में रहे ? उन सबों को किस तरह सुखी किया ? "सो सुग्रीव कीन्ह कपि राऊ। अति कोमल रघुबीर स्वभाऊ॥' (७) पुनः प्यारे के वचन हैं—कैसा हूँ कोई होय, एक बार कह दे "मैं आपका हूं" उसको सब जीवों से और अपने से भी अभय कर देते हैं। इत्यादि बहुत हेतु हैं।

हे सखि, यदि श्रीप्यारीजी के रूप गुणादि अधिक हों, तो हेतु देके प्रत्युत्तर देव।

*** सोरठा व्यास गान ***

पिय सखि के सुनि बैन, प्यारी सखि मुसुकाय कै।
उत्तर रस के ऐन, देन लगी अति चोप भरि॥

श्रीप्यारी सखी—

हे सखि, तुम ने जो प्यारे के रूप गुणादि के हेतु दिखलाये, वे अति उत्तम हैं, परन्तु मेरे भी सिद्धान्त वचन सुनो। प्रथम जन्म स्थान उत्तम दिखाया। उसका उत्तर सुनो। तुमने प्यारे के जन्म स्थान को मस्तक कहा, सो सही है। परन्तु मस्तक के ऊपर तिलक किया जाता है। यहाँ तो एक अयोध्या नगर मात्र को मस्तक कहा और वहाँ तिरहुत देश मात्र को तिलक कहा। इसमें भी ऋषि प्रमाण है।

देस सोहावन पावन वेद बखानिय।
भूमि तिलक सम तिरहुत त्रिभुवन जानिय॥

इस वचन से प्यारे से प्यारी का जन्म-स्थान अधिक दिखाया। (२) दूसरा हेतु कहा कि वे चक्रवर्त्ती पुत्र हैं। इस हेतु का उत्तर सुनो। यथार्थ चक्रवर्त्ती श्रीमिथिलेन्द्र महाराज ही हैं। क्योंकि श्रुति स्मृति यही कहती है। श्रुति—सम्राट् जन कौन है?

इस पर अर्षवचन है—

"कहैं गाधि नन्दन मुदित रघुनन्दन सों,
नृप गति अगह गिरा न जाति गही है।

देखे सुने भूपति अनेक झूँठे झूँठे नाम,

साँचे तिरहुति नाथ साखि देति मही है ॥"

इस हेतु से भी प्यारे से प्यारी की अधिकता आई।

तीसरा हेतु 'प्यारे का आविर्भाव प्रथम हुआ' यह तुम ने कहा। उसका उत्तर सुनो। जब देश बिगड़ जाता है, तब बादशाह प्रथम अपने मन्त्री को भेजते हैं। पश्चात् अपने जाते हैं।

चतुर्थ हेतु तुमने कहा कि प्यारी से प्यारे का रूप अधिक है। इसका उत्तर सुनों। प्यारी जू के रूप की छाया तद्वत प्यारे के रूप को निष्पक्ष कहने वाली श्रीतुलसी सखी का वचन है—

गरव करहु रघुनन्दन जनि मन माँह।

देखहुँ आपनि मूरति सिय कै छाँह ॥

और प्यारे से प्यारी जू के रूप की अधिकता में स्वयं प्यारे के श्रीमुख वचन प्रमाण हैं, जो पुष्पवाटिका में कहा है। 'सुन्दर ता कहँ सुन्दर करई' अर्थात् सब से सुन्दर मैं रहा, सो मुझे भी सुन्दर करने वालीं श्रीराजकिशोरीजी भईं।

पंचम हेतु रंग के विषय में है। इसका उत्तर भी पूर्वोक्त प्रमाण से ही हो गया, क्योंकि छाया श्याम होती है। अर्थात् प्यारी जू का गौर रंग है और उनकी छाया अति सुन्दर प्यारे का श्याम रंग है। यह भी श्रीतुलसी यूथेश्वरीजी के वचन से बिचार लेना।

षष्टम हेतु कहा कि प्यारे में करुणा अधिक है। इसका उत्तर सुनो। सुग्रीवजी का जो सहाय्य किया, उस में प्रथम उन्होंने कहा। हे राघव, हम आपकी प्रियाजी का पता लगावेंगे। और सुग्रीव कुछ शत्रु नहीं रहे। मित्र भाव से उनकी रक्षा की और, विभीषण ने जब शरण शब्द का प्रयोग किया, तब उनकी रक्षा की। प्यारीजी तो तत्काल दुःख देने वाली राक्षसियों की रक्षा की। इससे प्यारे से प्यारीजी में करुणा भी अधिक दिखाई।

सप्तम हेतु कहा कि 'कोई होय, यदि एकबार कहे 'हम आपके हैं।' उसको सर्व जीव से अभय देते हैं।' इसका भी उत्तर सुनो। प्यारे ने तो एक बार ऐसा कहने की अपेक्षा रखी, परन्तु प्यारी की दृष्टि में तो कोई पापी है ही नहीं अर्थात् कैसा हूं पापी हो, हमारे पास चला आवे, उसकी रक्षा मैं करूंगी। इसमें महर्षि वचन प्रमाण है।

इससे तुम्हारे प्रश्न के जो जो हेतु रहे, उनके उत्तर तुम ने पाये। और भी इस विषय में कुछ कहना होय, तो कहो।

प्रिय सखी—हे सखि, अब इससे अधिक हमारी दृष्टि में कुछ नहीं आता है।

प्यारी सखी—हे सखि, और भी प्यारे से प्यारीजी की अधिकता सुनो। संसार की रीति है कि जो जन्म लेता है, वह माता वा पिता के रंग वाला होता है। प्यारे के तो पिता गौर और माता भी गौर, और प्यारे श्याम। इससे प्यारे के जन्म

बिषय में भी सन्देह ही है। प्यारी जू के पिता गौर, माता गौर और प्यारीजी भी गौर। यदि पृथ्वी से आविर्भाव है, तो पृथ्वी भी गौर रंग है। इससे प्यारीजी का जन्म विषय निःसन्देह है। पुनः प्यारे का आविर्भाव श्रीकौसल्याजी के उदर से हुआ, इतना कहना ही पड़ेगा। और प्यारीजी का आविर्भाव साक्षात् पृथ्वी विदीर्ण करके छत्र चँवर से सेवित सखि गणों से संयुक्त हुआ। अर्थात् किसी के उदर से नहीं हुआ। स्वयं आविर्भूत हुईं। इससे हमारी स्वामिनी श्रीसिया प्यारी जू सर्व प्रकार से अधिक हैं। जय जय कार!

प्रणय पूर्ण दाम्पत्य सम्वाद—

❋ व्यास गान दोहा ❋

दोउ सखि के वर वैन सुनि, दंपति हिय हुलसाय।
निज हिय के कहने लगे, प्रीति प्रनय दरसाय॥

नायक वचन—हे प्राण प्रिये, आज आप से शपथ करके मैं अपने हृदय का सच्चा अभिप्राय कहता हूं। वह अभिप्राय क्या है, उसको सुनिये। जैसा आपके बीच में मेरा प्रियत्व है, वैसा मुझे अपने बीच में भी नहीं है। हे प्राणवल्लभा जू, मुझे करोड़ों ब्रह्मांड भी मिल जावें, तो भी वह आनन्द मुझे नहीं होगा, जैसा कि आपके मुख कमल के मकरन्द पान करने से होता है। हे श्रीमहाराजनन्दिनी जू, आप मेरे श्रवण, नयन और मन में बसती हो। अर्थात् श्रवण से आपके रूप गुणादि सुनता हूं, नेत्र से आपका रूप देखता हूं और मन से परोक्ष में

आपही का मनन करता रहता हूं। अतएव आपको छोड़ मुझे और कुछ नहीं सोहाता है। आपकी वाँकी चितवनि के ऊपर अपना सर्वस्व निछावर करता हूं। हे प्राण प्रिये, मेरे हृदय के आनन्द के कारण एक मात्र आप ही हो। मेरी प्राण रक्षा के लिये संजीवनी हो। मेरे प्राणों के भी प्राण हो। हे श्रीप्राण-प्यारी जू, आपके मुखचन्द के अवलोकन में जो पलक पड़ता है, वह मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं तो ब्रह्मा को निन्दा करने लगता हूं। ब्रह्मा को प्रेम की पहचान नही है। यदि पहचान होती, तो नेत्रों के ऊपर पलक नहीं बनाता।

मैं तो अपने को धन्य भाग मानता हूं, जो कि आप जैसी प्राण प्यारी मिली।

हे प्राण प्यारी जू, और बहुत क्या कहूँ? आपके जो दासी वर्ग हैं, उनके भी मैं सदा अधीन हूँ। सब कुछ उन्हें देकर भी दीन हो जाता हूं। विचारता हूँ कि इनके योग्य कुछ न दिया। उनको मैं यह नहीं जानता कि ये दासी हैं। तब आपके बीच में प्रियत्व का क्या कहना है?

*** व्यास गान दोहा ***

प्रेम भरे पिय वचन सुनि, प्रिया मधुर मुसक्याय।
दारि विभूषन वचन पै, लिये लाल उर लाय॥

(श्रीप्रिया जू—अपने अंगों के भूषण श्रीप्रियवचन पर न्यौछावर कर सखियों को लुटाती हैं और श्रीलालजी को हृदय से लगा लेती हैं।)

श्रीनायिका (प्रिया जू का) बचन—

हे प्राणनाथ, हे प्राण प्रिय, मेरे वचन को भी कान देकर सुनिये। मैं भी अपने हृदय की बात कहती हूँ। उस बचन को प्रमाण मानिये। जहाँ तक मेरी वस्तु है, जिनको मुझ में ही स्वामित्व है, जिनका मैं ही पालन पोषण करने वाली हूं और जहाँ तक ये मेरी सखिगण अंगभूता हैं, सब आपही की हैं। हे प्राणनाथ, यदि ये सब आपके काम न आवें, तो मैं उसी समय इन सबों का त्याग कर दूं। जो आपकी नहीं, वह मेरे किसी काम की नहीं। हे प्राणनाथ, मैंने अपने अंगों का भी जो पालन पोषण किया है और करती हूं, वह आप ही के सुखार्थ। जो मेरे अंग आपके सुख निमित्त न होवै, उन अंगों को मैं उसी समय त्याग कर देऊं। हे प्राणनाथ, बहुत कहाँ तक कहूं? आपके वास्ते समय पड़े तो प्राण तक देने को भी समर्थ हूं।

*** व्यास गान दोहा ***

सुनि प्यारी के वचन पिय, रोम उठे पुलकाय।
भुज भरि अंक लगाइ के, करन लगे रस चाय॥

*** सोरठा व्यास गान ***

यहि विधि दोउ रस माल, करि कौतुक रस रूप भरि।
सखियन गीत रसाल, गावन अरु नृत्यन लगी॥

(लीला विसर्जन आरती तथा 'रंग भरि जोरी सदा चिर-जीवो' शीर्षक पद का मंगलानुशासन।।

इति श्रीमती रसमोद लता संयोजित कन्दुक केलि विहार तथा विविध सरस सम्बाद मय लीला प्रकरण सम्पूर्णम्॥ शुभं भूयात्। मङ्गलं संतनोतु॥

श्रीप्रिया प्रियतम रसमोद माला

❀ श्रीअशोक वन विहारिणी विहारणौ विजयेते ❀

❀ सर्वेश्वर्यै श्रीमत्यै चन्द्रकलायै नमः ❀

पद्यात्मक तथा वार्त्तिक सरस सम्वाद
सुमनों से गूंथी हुई
श्रीप्रिया प्रियतम रस मोद माला।

यहाँ पूर्व कथित गेन्द केलि विहार लीला वाला मङ्गलाचरण संगीतज्ञ समाज गायेंगे।

❀ तत्पश्चात् व्यास द्वारा सोरठा गान ❀

वन असोक सिय लाल, वेदी परम प्रकास पर।
बैठे दिय भुज माल, परितः सखि सब राजहीं॥

❀ दोहा ❀

सखी उठी सिर नाइ कै, जुगल पत्त को धार।
इक प्यारी उत्कर्ष कह, इक रघुराज कुमार॥
प्यारी परम परत्व कोउ, दरसावहिं अधिकाइ।
काहू प्रीतम विभव को, अधिक दिखावहिं गाइ॥
पिय की सखि बोलत भई, सिय सखि प्रति दै तान।
सिय के रूप तो है अधिक, पै पिय के अधिकान॥
जटाजूट वल्कल सजे, पिय लखि मुनि तपसाल।
ह्वै तिय पिय से मिलन को, चाहत भै तत्काल॥

श्रीप्राण प्रियतम सखी का वार्त्तिक सम्बाद—

हे आलियो, हम सबों के सादृश्य इस त्रैलोक्य में कोई भी नहीं है, जो हम सब सखियाँ श्रीप्रिया प्रियतम जू की सहचरी पद को प्राप्त हुई हैं। हम सबों के भाग्य को ब्रह्मा भी नहीं बर्णन कर सकते हैं, इसमें भी इतना आज अवश्य कहूंगी कि हमारे उभयदल सखी समाज में श्रीप्यारे की सखियों का सौभाग्य गौरव अधिक है, क्योंकि हमारे प्रियतम सब प्रकार से अधिक हैं। यदि कहो कि मनके मोदक ही खाती हो वा अधिकता में कुछ कारण भी दिखावोगी? इसके उत्तर में प्रथम तो प्यारे के रूप को देखो। यद्यपि श्रीस्वामिनीजी का श्रीविग्रह अधिक सुन्दर है, तौभी श्रीप्रियतम के मनहरण विग्रह में अधिकता अवश्य है।

यदि कहो कि यह कैसे जाना जाय? तो देखो आपके सामान्य वेष को देखकर भी बड़े बड़े तपसाली मननशील मुनिगण भी स्त्री रूप होकर श्रीप्रियतम से मिलने के लिये उत्सुक हुये। अब इससे अधिक क्या कहा जाय?

❋ व्यास गान दोहा ❋

पुनि बोली सिय की सखी, सुनहु सखी दै कान।
पीतम हूं से अधिक करि, प्यारी रूप बखान॥
कौसल्या निज वधू के, रूप न यावत देख।
तावत अपने पुत्र प्रति, रही गुमानन रेख॥

भा विवाह आई जबै, वैदेही ससुरारि ।
मुख देखन धाई सबै, श्री अवधेश्वर नारि ॥
परिछन करि सब सासु गन, पुनि पुनि लेत बलाइ ।
पाँवरि डारत हर्ष युत, लै आई अँगनाइ ॥
घूंघट खोलत कोटि शशि, फैली फरस जोन्हाइ ।
चितवहिं चित अति चकित ह्वै दुलहिन दर्सन पाइ ॥
हेरि थकी सिय सुमुख छवि, पटतर कतहुँ न पाइ ।
कौसलपति सत सक्र सम, वारत विभव लजाइ ॥
वदन दिखाई नेग में, देन वस्तु मन भाइ ।
किन्हों बहुत विचार पै, कछु नहिं जिय ठहराइ ॥
तब रघुबर के रूप प्रति, जो गुमान अधिकाइ ।
निज दुलहिन के नेग में, दीन्हों वदन दिखाइ ॥
सिय की वदन दिखाइ में, पियहि रूप दिय सासु ।
याते सखी बिचारि लै, न्यूनाधिक ह्वै जासु ॥

श्री प्राणप्रिया सखी सम्वाद (वार्तिक —

अरी प्यारी सखी, आज तुम कैसी अनोखी बातें कर रही हो ! अब मैं श्रीप्राण प्रीतम के रूप से श्रीप्राणप्रियाजी के रूप को अधिक दर्शाती हूँ । तुम सुनो । श्रीआर्य्या महारानी कौसल्या जू ने जब तक अपनी पुत्रवधू के रूप को नहीं देखा था, तब तक अपने पुत्र के रूप गुमान में भरी रहती थीं । जब विवाहिता होकर हमारी श्रीप्राणप्यारी वैदेहीजी ससुरार को

आईं, तब आपके रूप देखने के लिये सब महारानियाँ जुटीं। परिछन करके बारम्बार बलैया लेती हुई पाँवड़ा डारती हर्षयुत अँगनाई में ले गईं। अपनी दुलहिन का घूंघट खोल चकित होकर सब सासुयें मुख दर्शन कर रही थीं। तब प्यारीजी की मुख छवि के पटतर देने के लिये हेरकर थक गईं, परन्तु कुछ भी पटतर के योग्य नहीं पाईं तब श्रीकौशलपति महाराज के करोड़ों इन्द्र के सदृश्य वैभव भी आपके ऊपर निछावर करने में लज्जित हो गईं, क्योंकि यह भी आपके रूप के अनुरूप नहीं जचा। तब लोक रीति से अपनी वधू के मुँह दिखाई नेग देने के लिये मन भाई वस्तु बहुत बिचार करती रहीं, परन्तु कोई भी आपके रूप के योग्य मनमें न आई। तब आर्य्या श्रीकौसल्या महारानी जू को अपने पुत्र के रूप का जो गुमान रहा, वही गुमान अपनी दुलहिन की मुँह दिखाई में देतीं भईं। इस प्रसंग से तुम ही दोनों के रूपों में न्यूनाधिक्य अपने मनमें विचार लो।

※ व्यास गान दोहा ※

कोइ बोली निर्हेतु सखि, सरनपाल पिय देखि।
जाके सुमिरन ते अली, मिटहि कलेश अलेखि॥
तिय वियोग में मगन पिय, छन छन दुखन प्रवाह।
ताहि समय आये सरन, महा दीन कपिनाह॥
बालि त्रास व्याकुल सदा, चैन नहीं दिन रैन।
ताहि मारि निर्भय कियो, सहि जग कुत्सित बैन॥

सकृत वदत तवास्मि कोउ, अस प्रपन्न लखि पीय।
अभय देत सब से सदा, राखत अपने हीय ॥

श्रीप्राण प्रीतम की सखी का सम्वाद (वार्त्तिक)—

बहनो, श्रीप्राणप्रियतम की और भी एक प्रशंसा अधिक है। वे शरणागतपाल और बड़े कृपालु हैं। उनके स्मरण मात्र करने से अनेकों क्लेशों का सद्यः नाश हो जाता है। देखो, जिस समय आप श्रीस्वामिनीजी के वियोग से वियोगी होकर, उस दुःख प्रवाह को क्षण क्षण याद कर रहे थे; उसी समय आपको महादानी शरणपाल जान, वालि त्रास से महा-व्याकुल सुग्रीव महादीन हो शरण में आये। उस समय महा-व्याकुल सुग्रीव को एक पल के लिये भी चैन नहीं था। ऐसे शरणागत की रक्षा के लिये जगत में अपना उपहास भी सहन किया और अभिमानी वालि को मार गिराया। सुग्रीव को रक्षा कर राज्य दिया। ऐसे एक नहीं अनेकों दृष्टान्त हैं। कोई जीव एक बार भी ऐसी याँचना करता है कि हे देव मैं आपका हूं; तो ऐसा कहने से ही उसकी सर्व प्रकार से रक्षा कर, उसे जीव मात्र से अभय कर देते हैं और उसे अपने हृदय में रख लेते हैं।

* व्यास गान दोहा *

साँच कही सुन री अली, यामें कुछ शक नाहि।
पै निज मनहिं विचार लै, कारन है वा नाहि ॥

शरन लिये सुग्रीव को, सिय दरसन अभिलाष ।
यामें हेतु प्रत्यच्छ है, कस निर्हेतुक भाष ॥
पिय तो सकृत कहन को, राखत हैं अनुबंध ।
सिय जू सोऊ कहन को, राखति नहिं प्रतिबंध ॥
निठुर निरदई राकसिन, दई त्रास तत्काल ।
ताहि हनन वर माँगते, बोली कुपिता बाल ॥
सुनु बानर मम वचन वर, पापी अति वध जोग ।
ताहूँ पर दाया करैं, आर्य सुलच्छन लोग ॥
इन सब के कछु दोष नहिं, यह रावन आधीन ।
तब तो दुख देती रहीं, अब तो सब अति दीन ॥
दोष दृष्टि आवै नहीं, मो मन बानर पूत ।
दोषी अपि आवै सरन, ताहि गहौं मजबूत ॥
दोषी होय अदोष वा, चलि आवै मम पास ।
राखौं ताको प्रान सम, बहुरि न काहू त्रास ॥
अस सुभाउ जुत स्वामिनी, सरनपाल निर्हेतु ।
पिय कृपालुता सभा को, लघुतर यों करि देत ॥
और कछू जो कहि सकौ, स्वामी गुन अधिकाय ।
बोलो गांठी खोल कै, राखौ नहीं बचाय ॥

श्रीप्रियाजी की सखी का सम्वाद (वार्त्तिक)—

अरी अली, तुमने सच कहा ! इसमें कुछ सन्देह नहीं है । परन्तु तुम अपने मनमें स्वतः विचार लो, कि इसमें कोई

कारण है या नहीं। तुम जानती हो कि श्रीप्रीतमजी ने श्रीसुग्रीव जीको शरण में लिया है सो श्रीस्वामिनीजी के दर्शन सुख के लिये, सो प्रत्यक्ष है; फिर तुमने अकारण कैसे ठहराया? प्रीतम तो एक बार कहने पर शरण में अङ्गीकार करते हैं और श्रीस्वामिनीजी तो बिना कहे शरण में ग्रहण कर लेती हैं। देखो, निष्ठुरी राक्षसियाँ अनेकों प्रकार के भय आपको दिखाती थीं। तत्पश्चात् श्रीहनुमतलालजी ने उन सबों को मारने के लिये वरदान माँगा। उस पर श्रीस्वामिनीजी ने क्रोध कर उत्तर दिया कि हे वन्दर, मेरे बचनों को दृढ़ता पूर्वक सुनो। जो पापी वध करने योग्य भी है, उस पर सुन्दर लक्षण वाले आर्य्य दया ही करते हैं। इन सबों का कोई दोष भी नहीं। ये तो रावण के अधीन होकर उस समय मुझे दुःख देती थीं। अब तो सब दीन और अधीन हैं। इसलिये हे वानरकुमार, मेरी दृष्टि में इन सबों का दोष नहीं दीखता। यदि दोष भरे जीव भी मेरी शरण में आ जावे, तो उसको भी मैं निर्दोष बना देती हूं।

ऐसे स्वभाव वाली श्रीस्वामिनीजी शरणागत जीवों की निर्हेतुक रक्षा किया करती हैं। इससे श्रीस्वामिनीजी की उदार दरवार ने श्रीप्राणवल्लभ की शरणागत वत्सल सभा को लघुतर बना दिया।

यदि और भी श्रीप्रीतमजी के गुणगण वर्णन करना होय, तो हृदय की गांठ खोलकर कह चलो, बाँकी न रखना।

*** व्यास गान दोहा ***

सुनि सरन्य गुन प्रिया के, पिय मन अधिक उछाह ।
रोम रोम पुलकित भये, प्यारी सखि मुख चाह ॥
सुनि ठठकी प्यारी सखी, पिय मन कियो बिचार ।
अब जौं ठहरौं इहि सभा, हाँसी होय हमार ॥
प्यारी पक्ष सुजीत में, मो मन हर्ष न माय ।
पै मेरी सखियन कहैं, लाल हँसायो हाय ॥
ताते चल कौतुक करौं, सब जिय होय खँभार ।
हार जीत रह जायगो, सब हिय विरह प्रचार ॥
ऐसे मनहि विचार के, बोले सिय प्रति लाल ।
अनिवार्य पितु कार्य की, सुधि मोहि आई बाल ॥
इसी समय जाऊं सही, कार्य सिद्धि तत्काल ।
नातरु काल विलंब में, कार्य नष्ट सब बाल ॥
ताते आज्ञा देहु मोहि, आसु करौं पितु कार्य ।
शीघ्र आइ तोहि सन मिलौं, प्यारी मनमें धार्य ॥

श्रीप्राणप्रीतम जू का सम्वाद (वार्त्तिक)—

हे प्राण प्यारी जू, इस समय श्रीपिताजी के एक अत्यन्त आवश्यक कार्य कार्य का स्मरण हो आया है । वह कार्य इसी समय जाने से शीघ्र होगा । विलम्ब होने से कार्य की क्षति होगी । इस कारण यदि आप आज्ञा दें, तो मैं अत्यन्त शीघ्र पिताजी का कार्य सम्पादन कर, लौटकर आपसे मिलूं ।

*** व्यास गान दोहा ***

प्यारी सखियन ने कहा, झूंठ कहत हौ लाल।
जीत हमारी होत है, ताते निकसन चाल ॥

श्रीप्रिया सखी—

हे लाल जू, अब आप मिथ्या क्यों कहने लगे ? हमारी जीत देखकर निकलने को चाहते हैं।

*** व्यास गान दोहा ***

झूंठ कबहुँ नहिं कहत हौं, मेरा अस न सुभाव।
खेल अनेकन होत हैं, तामें कछु न बसाव ॥

श्रीप्राण प्रीतमजी—

हे प्यारी, मैं कभी मिथ्या भाषण नहीं करता हूं। ऐसा मेरा स्वभाव है। ऐसे खेल तो अनेक प्रकार के होते ही हैं। उनमें मेरा कुछ बस नहीं चलता।

*** व्यास गान दोहा ***

प्यारी बोली हे पिया, कारज संभव नाहिं।
पै ऐसे जब कहत हौ, ताते शीघ्रहिं जाहिं ॥

श्रीप्रियाजी—

हे श्रीप्रीतमजी, इस समय तो किसी कार्य की संभावना नहीं जान पड़ती; पर जब आप इस प्रकार से कहते हैं, तो हे श्रीप्राण प्यारेजी, जाँय और कार्य करके शीघ्र ही आइये।

* व्यास गान दोहा *

कहुँ इकान्त वन कुंज में, तहँ बैठे छिपि जाय।
बहुत समय बीत्यो जबै, सखिन उठी घबराय॥
इत उत पिय खोजन चली, सखिन सहित श्रीसीय।
विरह बावरी बहु फिरी, पायों नहि कहुँ पीय॥
तब बोली श्री मैथिली, तुम सब वाद बढ़ाय।
दूर किये पिय नैन से, नहिं कछु चलत उपाय॥
कित जाऊं कित पाउं मैं, हृदय सुकंठ लगाय।
मिलि बैठों इक साथ में, हिय के ताप नसाय॥
जो मेरो जीवन जरी, प्रीतम नवल किसोर।
सो अब कित मैं पाइहौं, हाय रसिक सिरमौर॥
इत्थं विविध विलाप करि, बैठि अधोमुख होय।
सोक समन्वित नखन से, लिखन लगी महि जोय॥

श्रीप्रियाजी –

अरी सखियो, तुम सबों ने व्यर्थ ही बाद विवाद बढ़ाकर, मेरी आँखों से श्रीप्राण वल्लभजी को दूर कर दिया। अब तो कुछ उपाय भी नहीं चलता। कहाँ जाऊं? जहाँ जाकर प्राणनाथजी से मिल, अपने कंठ से लगाय, हिलमिल कर एक साथ बैठ, अपने हृदय की तपनि को बुझाऊं। जो मेरे प्राण संजीवन मूरि नवलकिशोरजी हैं, सो अब कहाँ मिलेंगे? हाय! हाय! हे रसिक सिरमौर, मैं कहाँ जाऊं? कहाँ पाऊं?

* व्यास गान दोहा *

इतने में रघुचन्द ने, वंसी वाद्य बजाय ।
प्यारी आकर्षन करन, काम मंत्र भरि भाय ॥
आओ आओ हे प्रिये, रमिये मेरे साथ ।
ऐसी बंसी से गिरा, प्रगट करी सिय नाथ ॥
वंसी ध्वनि जैसे सुनी, चकित उठी सिय वाल ।
मन पहुँच्यो पिय पास इत, तन रहि गयो बिहाल ॥
इत उत चहुँ कित देखती, आकर्षित होइ बाल ।
कहँ ते आई यह ध्वनी, जो मेरे मन साल ॥
आकर्षित ह्वै चलन को, चाहत है तत्काल ।
चेष्टज्ञा श्रीससिकला, जान गई सिय हाल ॥
बोली हे श्री मैथिली, मन को करहुँ सँभार ।
जाना चाहौ क्या जहाँ, वंसी ध्वनी प्रचार ॥
राजकुमारी मान निज, कछु नहिं करत विचार ।
मान विदारन को तुम्हें, बंसी सब्द उचार ॥
सावधान ह्वै रहहु तुम, मैं सब करौं उपाय ।
मान बिदारौं कुँअर के, मन अभिमान बहाय ॥
हैं वह राजकुमार भी, सर्व गुनन सिरमौर ।
पै मैं वीन बजाइ कै, लावौंगो बर जोर ॥
आनि मिलावौं तोहि सों, पाँय परावौं तोर ।
तब तो मैं तेरी सखी, सत्य प्रतिज्ञा मोर ॥

यदि मैं राजकुमार को, बीन बजा बरजोर ।
ना लाऊं तो आज से, बीन न गह्हव बहोर ॥

श्रीचन्द्रकला जू—

हे श्रीप्यारी जू, जहाँ से यह बंशी की ध्वनि आ रही है, क्या आप वहाँ जाना चाहती हैं ? आप ऐसा न करें । मन को रोक रखें । आप तो श्रीमहाराजकुमारी होती हुई भी कुछ बिचार नहीं करती हैं । यह जो श्रीप्राण प्रीतम ने बंशी ध्वनि की है, सो केवल आपके मान ध्वंस के लिये समझिये । इस कारण समझ बूझकर सावधान होकर रहें । मैं सब उपाय करके, श्रीराजकुमार के मनोगत अभिमान को दूर करूंगी । यद्यपि वह राजकुमार हैं, और सब गुणों से सम्पन्न भी हैं, तौभी मैं वीण बजाकर, उनको यहाँ पर बरजोर लाऊंगी और आपसे मिलाऊंगी । तभी मैं आपकी सच्ची सखी हूं । ऐसी मेरी प्रतिज्ञा है । यदि मैं राजकुमार को वीण बजाकर बरजोर न लाऊं, तो आज से पुनः यह वीण हस्त में ग्रहण न करूंगी ।

*** श्रीचन्द्रकलाजी द्वारा पद गान ***

क्या मन माँह बिचारी री प्यारी ।
जान चहति हौ जहँ है प्रीतम, नीति न उचित तिहारी ॥
मान विदारन कारन तुम्हरे, बंसी तान उचारी ।
राजन राजकुमार गरव तजि, मिलिहैं पगन जोहारी ॥

अबही वीन बजाइ ताहि को, लाऊंगी बरियारी।
हाजिर करौं हजूर तिहारे, तो मैं सखी तिहारी॥
ना लाऊं बरजोर कुँअर जौं, वीन देउँ कर डारी।
सत्य प्रतिज्ञा जानहुँ मेरी, उमग 'मोद' मन धारी॥

* व्यास गान दोहा *

सप्त कच्छ यहि महल के, मध्य बैठु परजंक।
सखि सब सेवा में रहैं, सावधान निःसंक॥
एक एक सौ द्वार प्रति, प्रतिहारिनि बैठाउँ।
रोकन हित रघुनन्द को, सजग रहैं तिहि ठाउँ॥
तुअ समीप प्रतिहारिनी, राज कुँअर संदेस।
लै आवै तो तुम कहो, मैं नहि सुनौं संदेस॥
जाने चन्द्रकला अली, उनहीं कहो संदेस।
मेरी आज्ञा के बिना, करैं न महल प्रवेस॥

श्रीसर्वेश्वरी चन्द्रकलाजी—

आप सप्त कक्ष के महल में विराज जाइये। और सखियाँ सब आपकी सेवा में सावधान रहेंगी। मैं प्राणप्रीतम जू को रोकने के वास्ते एक एक द्वारपर सौ सौ प्रतिहारिणी बैठाऊंगी। आपके पास में कोई प्राणप्रीतम जू का संदेश लेकर आवे, तो आप कहें कि यह संदेशा श्रीचन्द्रकलाजी से जाके कहो। मेरी आज्ञा के बिना श्रीराजकुमार महल में प्रवेश करने न पावें।

* व्यास गान दोहा *

चन्द्रकला के वचन सुनि, अति हर्षित भइ सीय।
सीघ्र जतन करु हे प्रिये, जामें पाऊं पीय ॥

श्रीप्राणप्रिया जू—

हे श्रीचन्द्रकले, बहुत शीघ्र ऐसा यत्न करो, जिसमें श्री-प्राणप्रीतम जू शीघ्र आके मिलें।

* व्यास गान *

(श्रीचन्द्रकलाजी का कुञ्जान्तर में बैठकर वीणा वादन)

पिय आकर्षन करन को, कुंजान्तर में पैठि।
चन्द्रकला वीना लिये, कौतूहल जुत बैठि ॥
पंचबान जे काम के, तामें भरी रसाल।
रनतकार के करत हीं, ध्वनि दिसि विदिसि प्रचाल ॥
भुवन चतुर्दस में तुरित, छाई रनत रसाल।
चेतन और अचेतनौ, धुनि सुनि भये विहाल ॥
पंचबान जुत सब्द सो, राजकुँवर हिय जाय।
मदन सु उन्मादन कियो, दसा बरनि नहिं जाय ॥

(वीणा बजाकर श्रीचन्द्रकला जू का पद गान)

* तर्ज—चैती *

खिली गुलाब की कलिया रे भँवरा, तू रस ले आ।
जौं तुम यहि छन नहिं आवहुगे, तौ ह्वै है पछतैया ॥

भरि मकरंद गुलाब की कलिया, मनसिज जंग मचैया।
भँवर सिरोमनि नाम कहा के, बैठे छिपि कदरैया॥
मनसिज सर तुअ हिय बेधन करि, लाऊँगी बरियैया।
कलि आगे हाहा करवैहौं, तब दैहौं मधुरैया॥

* व्यास गान दोहा *

(प्रसंगानुकूल श्रीलालजू का प्रथम कक्ष के द्वार तक आना। प्रतिहारिणी द्वारा रोक।)

नहि समर्थ गति रुघन को, राज पुत्र बलवान।
धैर्य त्यागि उठि चल पड़े, बंसी ध्वनि समुखान॥
सर्प मंत्रवित मंत्र जल, आक्षेपे जिहि ओर।
सर्प महा द्रुत ह्वै तदा, आवत है तेहि ठौर॥
तैसे राजकुमार भी, वीना धुनि सुनि मोहि।
निकसि कुंज से शीघ्रतः, धुनि दिसि धाये जोहि॥
निज गौरव रक्षन करन, बहुधा यतनहुँ कीन।
तदपि न भये समर्थ कछु, राजपुत्र अति दीन॥
मोहित मदन सुवेग से, तन के नहीं सँभार।
जहँ जहँ से ध्वनि आवहीं, तत्र तत्र पगुधार॥
भ्रमत भ्रमत आये तहाँ, प्रथम कक्ष के द्वार।
प्रविस करन चाहत जहाँ, बीन बजावनि हार॥
छड़ीदारिनी ने तहाँ, रोकि कह्यो हे लाल।
नहिं प्रविसहुँ यहि द्वार से, बिन आज्ञा सिय बाल॥

द्वारपालिनी वचन—

हे श्रीमहाराजनन्दन जू, श्रीप्राणप्रिया जू की आज्ञा के बिना, इस महल के भीतर आप प्रवेश नहीं कर सकते हैं।

❋ व्यास गान दोहा ❋

तासु बचन सुनि प्रान प्रिय, तेहि प्रति भाष रसाल।
प्रान प्रिया प्रति जाइ मम, आसु निवेदो हाल ॥
प्यारे द्वारे पै खड़े, दरसन हेतु तुम्हार।
विरहाकान्त नितान्त हैं, जो आज्ञा सिर धार ॥

श्रीप्राणप्रीतम जू—

हे द्वारपालिनी, मेरे आने का समाचार श्रीप्राणप्रिया जू से निवेदन करो। तुम जाकर उनसे कहना कि 'हे प्राणप्रिया जू, आपके प्राणनाथ आपके दर्शन बिना अति व्याकुल हैं और भीतर महल में आना चाहते हैं। क्या आज्ञा होती है?

❋ व्यास गान दोहा ❋

राजकुँवर के बचन सुनि, दूती गइ सिय पास।
करि प्रनाम बोलत भई, जो पिय सिय प्रति भाष ॥
प्रतिहारिन के बचन सुनि, बोली सिय मुसुकाइ।
चन्द्रकला पहँ जाहु तुम, करहु जो देइ रजाइ ॥

श्रीप्राणप्रिया जू—

हे द्वारपालिनी, तुम श्रीचन्द्रकलाजी के पास जाओ। जैसी वह आज्ञा करें, वैसा करो।

* व्यास गान दोहा *

गई तहाँ प्रतिहारिनी, स्वामी बचन सुनाइ।
तेहि प्रति बोली सिय सखी, आवन दे सिय साँइ॥

श्रीसर्वेश्वरी (चन्द्रकला) जी—

हे दूती, तुम अपने दरवाजे से श्रीप्राणप्रीतम जू को आने दो।

* व्यास गान दोहा *

गइ दूती पिय सों कहीं, जाइये राजकुमार।
गये दूसरे द्वार पर, दूती तहाँ निवार॥
वह भी बोली हे प्रभो, महल जान नहिं पाव।
बिन आज्ञा सर्वेश्वरी, कोटिन किय उपाव॥
जितनी ड्योढ़ी हैं यहाँ, सब पै सिय की रोक।
ताते कैसे जावगे, यद्यपि राउर ओक॥

द्वारपालिनी—

हे श्रीप्राणप्रीतम जू! आप श्रीसर्वेश्वरी जू की आज्ञा बिना, कोटिन उपाय करने पर भी भीतर प्रवेश नहीं कर सकते हैं। यहाँ जितनी ड्योढ़ियाँ हैं, सबों पर आपके निवारण के लिये, श्रीप्यारीजी की तरफ से रोक है। यद्यपि आपका ही महल है, परन्तु श्रीस्वामिनी जू की आज्ञा बिना कैसे प्रवेश कर सकेंगे ?

*** व्यास गान दोहा ***

प्रतिहारिनि मोहि जान दे, देउँ तुम्हें जो चाह।
पै मोको रोको नहीं, सिय बिन देखे दाह ॥

श्रीप्राणप्रीतम जू—

हे प्रतिहारिण ! मुझे रोको नहीं। मेरे हृदय में श्रीप्राणप्रिया के देखे बिना अत्यन्त जलन उठ रही है। जो तुम्हें इच्छा हो, सो मुझसे ले लो और मुझे भीतर महल में जाने दो।

*** व्यास गान दोहा ***

लेन देन की बात तौ, मैं नहिं जानौ नाह।
पै प्यारी आज्ञा बिना, कैसे करौं निबाह ॥
हौं राउर भी दासिका, सब बिधि प्रान अधार।
पै तन मन सर्वस बिके, स्वामिनि हाथ हमार ॥
शीघ्रहि ताते जात हौं, हिय में धीरज धार।
जैसी आज्ञा वे करैं, करौं सोइ सिर धार ॥

प्रतिहारिण वचन—

हे श्रीप्राणप्रीतम जू! लेने देने की बात तो मैं नहीं जानती। मैं जाने तो देती, परन्तु श्रीप्यारीजी की आज्ञा बिना कैसे महल के अन्दर जाने दूं? यद्यपि मैं आपकी भी दासी हूं, परन्तु हमारे तन, मन, सर्वस्व श्रीस्वामिनी जू के हाथ बिके हैं। इससे आप धैर्य धारण करें। मैं शीघ्र जाती हूँ। जैसी वे आज्ञा देंगी, वह मैं शिरोधार्य करूंगी।

* व्यास गान दोहा *

गई शीघ्र सिय पास सो, विनय सुनाई ताहि ।
सिय उत्तर देती भई, चन्द्रकला प्रति जाहि ॥
गइ दूती जहँ सहचरी, प्रीतम कथन सुनाइ ।
सुनि बोली तासों सखी, आवन दै यहि ठाँइ ॥
दूती आ पिय पास में, बोली जाओ लाल ।
गये तीसरे द्वार पर, तहूँ वैसही हाल ॥

द्वारपालिनी—

हे श्रीमहाराजनन्दन जू ! आप महल के भीतर जाइये ।

* व्यास गान दोहा *

यहि विधि गे पट द्वार पर, तावत भानुकुमारि ।
श्लाघित विद्या बीन से, रचि कौतुक बिस्तारि ॥
प्रिया मान रक्षन करन, भ्रमन करावन पीय ।
बीना ध्वनी निकासती, सिय बानी सम तीय ॥
बीना अरु सिय सब्द में, भेद न तनक लखाय ।
अति अद्भुत गुन बीन के, दीनो सबहिं दिखाय ॥
आओ आओ प्रानपति, बीना सब्द सुनाय ।
आवत यावत तहँ पिया, पुनि धुनि अनत सुनाय ॥
उतै पुनः जब जात पिय, तावत अनत सुनाय ।
ऐसे भ्रमन करावती, सिय नहिं कतहुँ दिखाय ॥

तब खेदित धरनी गिरे, अंग अंग मुरझाय ।
करि बिलाप रोदन करैं, प्रान प्रिया चित लाय ॥
दरसन दीजै शीघ्र ही, हा हा प्रान पियारि ।
क्यों तरसावत दरस बिनु, कोमल हिय सुकुमारि ॥
किधौं कठिनता आ गई, श्री फल के सतसंग ।
ऐसी तुहि नहि चाहिये, तो बिनु सब सुख भंग ॥
निरदयता अति धारि के, मोहि सतावहुँ प्यारि ।
दरसन दीजै वल्लभे, मम अपराध बिसारि ॥

श्रीप्राणप्रीतम जू का (वार्त्तिक सम्बाद)—

हे प्राण प्रिये ! आप शीघ्र दर्शन दीजिये । हा हा प्राण प्यारी! आप मुझे बिना दर्शनों के क्यों तरसा रही हैं ? आपका हृदय तो अत्यन्त कोमल है। हे प्राण प्यारी जू, क्या श्रीफल के संग से हृदय भी कठोर हो गया । ऐसा आपको नहीं करना चाहिये। आपके बिना मैं सब सुखों से हीन हो रहा हूं। आज आप निर्दयता को धारण करके, मेरे अंगों को पीड़ा दे रही हैं। हे श्रीप्राणवल्लभे, मेरे अपराध को भूलकर दर्शन दीजिये।

(श्रीलाल जू पद गान, रो रो कर)

लली तोहि, कल न परै बिनु देखे ॥
श्रीमिथिलेश कुमारि लाड़िली, मेरे नैन निमेषे ॥

छिन छिन विकल विहाल रहत तन, मदन दहत अनलेखे।
प्रान प्रिया मम आइ लगो गर, मिटिहै विपति विसेषे ॥

* व्यास गान दोहा *

इति चिन्ता जुत प्रान प्रिय, तावत भानु दुलारि।
प्रिया निकट जातो भई, बोली वचन बिचारि ॥
हे मिथिलाधिपनन्दिनी, जब आवैं पिय पासु।
मान धारि कै बैठिये, लखिये नहिं पिय आसु ॥

श्रीचन्द्रकला जू—

हे श्रीमिथिलाधिप नन्दिनी जू! जब श्रीप्राणप्रीतम जू, आपके पास आवें, तब आप मान धारण कर बैठेंगी और श्रीप्राणप्रीतम की ओर न देखेंगी।

* व्यास गान दोहा *

हे श्री चन्द्रकले प्रिये, स्वयं पास पिय आय।
कैसे मान सुधार के, बैठो रहन सुहाय ॥
अंग अंग पर वारिये, मनसिज फौज करोर।
ऐसे प्रीतम देखि कै, मान करूं कस जोर ॥
मैं तो प्रीतम लखत ही, उठि के भरि अँकवार।
अंग अंग से मिलौंगी, नहि कछु दोष विचार ॥
मान करन जानौं नहीं, मान करत किमि नारि।
माखन ते मृदु हृदय मम, द्रवत मान सुनि प्यारि ॥

श्रीप्रिया जू—

हे चन्द्रकले ! तुमही अपने मनमें बिचारो कि जब स्वयं श्रीप्राणप्रीतम आवेंगे, उस समय मैं मौन धारण कर कैसे बैठी रहूंगी ? जिनके अंग अंग प्रति करोड़ों कामदेव निछावर किये जाँय, ऐसे सुन्दर प्राणप्रीतम को देख, मैं किस तरह से मान करूंगी ? मैं तो श्रीप्राणप्रीतम को देखते ही उठकर दोनो बाहों से भरकर अङ्ग अङ्ग से मिलूंगी, और कुछ भी दोष का बिचार न करूंगी। हे प्रिये सखी, मैं तो मान करना जानती ही नहीं कि कैसे स्त्रियाँ मान करती हैं ? मेरा हृदय तो माखन से भी अधिक मृदुल है। मान शब्द सुनते मात्र पिघल जाता है।

※ व्यास गान दोहा ※

सत्यं देवि सुभाव तव, कोमल बिदित जहानं ।
धर्मज्ञा धर्मंहि निरत, छमासील सुचिवान ॥
तौभी मेरे हित बचन, करो अभी सुखमान ।
प्रीति बढ़न हित कहति हौं, अहित न कबहूँ जान ॥
यथा मिष्ट भोजन सुरुचि, बर्द्धक अहै खटाइ ।
तथा सुदम्पति प्रीति को, बर्द्धक मान सुहाइ ॥
तातें रमनी मान को, कवि जन विज्ञ प्रसंस ।
विप्रलंभ संयोग दोउ, भाग मिले रस संस ॥
रस सिंगार की द्विविधि को, रस कवि करत बखान ।
विप्रलंभ परभाग से, सुख सँजोग अधिकान ॥

गौरव राखन लोक में, मान बढ़ावति नारि ।
ताते पति को स्ववस करि, बिहरति नित्य सुखारि ॥
मान हीन है या तिया, युक्ता सब गुन और ।
नहि पति सुख वह पावती, तिरस्कार सब तौर ॥
मान सुखोदय करत है, गौरव राखत नीक ।
मान बढ़ावत प्रीति को, दम्पति हिय महँ ठीक ॥

सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी—

हे श्रीराजनन्दिनी जू! आपका कोमल स्वभाव और सहृदयता जगत में प्रसिद्ध है। आपकी क्षमाशीलता, पातिव्रत्य धर्म्म भी बिश्व विख्यात है। तौभी आज अपने हृदय से सुख मानकर मेरे बचनों पर ध्यान दीजिये; क्योंकि मैं आपकी श्रीप्राणप्रीतम के साथ विशेष प्रीति बृद्धि के लिये कहती हूं। आप अपने हृदय में अहितकर न जानिये। जैसे अम्ल रस पदार्थ के पाने से मिष्ट भोजन में अधिक रुचि होती है, वैसे ही मान दाम्पत्य प्रेम को अधिक बढ़ाता है। इसी से रसज्ञ विज्ञ कवियोंने मानकी प्रशंसा की है। हे प्यारी, शृङ्गार रस के दो भागहैं। एक विप्रलम्भ,दूसरा संयोग,संयोग सुख हीको बढ़ाने से विप्रलम्भ परभाग कहा जाता है। अतः विप्रलम्भ की प्रशंसा होती है। लोक में भी स्त्रियाँ अपने गौरव रक्षार्थ मान का विस्तार करती हैं। इससे अपने पति को स्वबश करके सुख सौभाग्य की बृद्धि करती हैं। यदि कोई स्त्री सब गुणों से युक्त भी है, पर यदि उसमें मान नहीं है, तो वह अपने पति के साथ

सुख बिहार में पूर्णता को प्राप्त नहीं होती और तिरस्कार को प्राप्त होती है। अतएव रसोदय के लिये, प्रीति वृद्धि के लिये, और गौरव रक्षार्थ मान विधेय है। इससे दम्पति सुख प्राप्त करते हैं।

* व्यास गान दोहा *

ऐसे सखि मुख बचन सुनि, कही मैथिली प्यारि।
मम पति ऐसे नहिं अहैं, यथा कहहु तुम नारि॥
स्वयं पिया आधीन हैं, मेरे सब विधि प्यारि।
लोक बिलच्छन मम पिया, तोसे कहौं प्रचारि॥
ताते मान सुचेष्टना, मेरे मन में नाहिं।
तौभी तेरे प्रिय करन, बचन करब सब ताहि॥

श्रीप्राणप्रिया जू—

हे प्यारी सखी! जिस प्रकार से तुम कहती हो, उस तरह के मेरे पति नहीं हैं। मेरे प्राणनाथ तो स्वयं मेरे अधीन हैं और लोकपति से विलक्षण हैं। यह तुमसे सिद्धान्त कहती हूं। इस कारण मान की चेष्टा मेरे मनमें नहीं भाती, तौभी तुम्हारे प्रिय करने के लिये, तुम्हारे बचन सब प्रकार से करूंगी।

* व्यास गान दोहा *

और एक श्री मैथिली, बचन सुनो सुख मान।
पिय संभाषन करन हित, बिनय करिय मम कान॥

आलिंगन तब कान्त के, करु कुचाग्र मिलि सीय।
त्वयि वियोगज दुःख सब, समन होय सुख हीय॥
यावत मैं तोहि नहिं कहौं, तावत न कुरु सँभाष।
इतनी मेरी और भी, विनय सुहिय में राख॥

श्रीसर्वेश्वरी चन्द्रकला वचन—

हे श्रीप्यारी जू! मेरी एक बात और ध्यान देके सुनें। जब मैं प्राणनाथ के साथ संभाषण के लिये आप से प्रार्थना करूँ, तब ही आप श्रीप्राणनाथ का आलिंगन करैं और संभाषण करैं, जिससे आप दोनों के वियोग जन्य दुःख शमन होकर हृदय प्रफुल्लित होय। जब तक मैं आपसे संभाषण करने के लिये प्रार्थना न करूं, तब तक आप न संभाषण करें न आलिंगन।

※ व्यास गान दोहा ※

सखी बचन रस श्रवन करि, श्रीमिथिलेस कुमारि।
ताकी प्रति बोलत भई, सुनु प्रियवादिनि बारि॥
वचन तुम्हारे करौंगी, तुम सब बिधि हितकारि।
पै धीरज किमि धारिहौं, बिह्वल पतिहि निहारि॥
तौभी तव हित करन हित, करब जु कहव तोहार।
किंचित काल कथंचन, धीरज धरव सँभार॥
जब आवेंगे प्रानपति, बिह्वल मेरे पास।
तब तुम निज वक्तव्य यदि, करौ न आसु प्रकास॥

तौ मेरी समरथ नहीं, धीरज धरन पियारि ।
अतः दोष नहि दीजियो, पुनि पुनि कहौं पुकारि ॥

श्रीप्राणप्रिया जू—

हे प्यारी, तुम तो हमारी सब प्रकार से हितैषिणी हो। अतः जो तुम कहोगी, वह मैं सब प्रकार से करूंगी । परन्तु जिस समय मेरे प्राणनाथ विह्वल दशा में मेरे पास आवेंगे, उस समय मैं कैसे धैर्य धारण करके रहूंगी ? तौभी तुम सभी सखियों को, जिस प्रकार से सुख प्राप्त हो, वैसा ही तुम्हारे बचन को हित मानकर करूंगी। परन्तु उस धैर्य को किसी प्रकार से सम्हार करके किंचित काल ठहरूंगी । जब विह्वल होकर प्राणनाथ मेरे पास आवेंगे, तब तुमको जो कुछ प्रार्थना युक्त कहना होय, वह शीघ्र कहना । यदि कहने में विलम्ब लगावोगी; तो मुझमें ऐसी सामर्थ्य नहीं कि धैर्य धारण करके बैठी रहूं । इससे विलम्ब होने से तुम्हारे हित में जो क्षति आवे, उसका दोष मुझे न देना ।

❊ व्यास गान दोहा ❊

सुनि प्रनाम करि ससिकला, पुनि आई सोइ थान ।
जहँ से पिय भरमावती, दै बीना में तान ॥

श्रीशिव पार्वतीसम्वाद में श्रीपार्वतीजी का प्रश्न—

सब बिद्या में अति निपुन, शिव वह राजकुमार ।
बीना बानी नहिं लखे, यह मम संसय टार ॥

श्रीशिवजी का समाधानात्मक उत्तर—

कोइ इक शक्ती राम की, आश्चर्या तेहि जान ।
चन्द्रकलाख्या जानिये, शक्तिन में परधान ॥
स्वया शक्त्याहि लीलया, सर्वज्ञो भगवान ।
मोहित ह्वै पाछै फिरैं, यामें रस अधिकान ॥
यद्यपि राजकुमार सो, विद्या सकल प्रवीन ।
पै यासे हारे हुये, मोहित ह्वै आधीन ॥
चन्द्रकला समतूल में, बीन बजावन हार ।
अपर नहीं त्रैलोक में, नहिं अचरज मन धार ॥

पुनः पूर्व प्रसंग—

❋ व्यास गान दोहा ❋

मैं तो याही ठौर हौं, तुम कहँ खोजौ पीय ।
प्रिया सहस धुनि बीन की, सुनि आये भरि हीय ॥
तहँ देखत हैं ससिकला, प्रान पियारी नाहिं ।
पूछे पिय हे सखिकले, प्रिया पता बतलाहिं ॥
यही ठौर से मैं सुन्यो, प्रिया वचन सुखदान ।
कहाँ गई मेरी प्रिया, रसदे करहु बखान ॥

श्रीप्राणप्रीतम जू—

हे प्रिये चन्द्रकले, मेरी प्राण प्रिया कहाँ गई ? मैंने अपनी प्राणप्रिया की प्रेममयी वाणी इसी स्थान से सुनी है।

पर यहाँ मैं अपनी प्राणप्रिया को नहीं देखता हूँ। इससे आप बतलाइये; क्योंकि आप उनकी प्राण प्यारी सखी हैं।

*** व्यास गान दोहा ***

ना जानौं मैं तव प्रिया, बसती कुत्र पियार।
वंसी सब्द सुनाइ कै, क्यों नहि लेत हँकार॥

श्रीसर्वेश्वरीजी—

हे श्रीप्राणप्रीतम जू! आपकी प्राणप्रिया कहाँ हैं, मैं नहीं जानती। आपतो वंसी बजाने में अति प्रवीण हैं। वंशी बजाकर अपनी प्राण प्रिया को शीघ्र बुला लीजिये।

*** व्यास गान दोहा ***

सुनि हँसि बोले प्राणपति, सुनिये राजकुमारि।
जानी तव माया अहै, जो मेरे भ्रमकारि॥
अब मोहि पै करुना करो, दीजै प्रिया बताइ।
मदन दहन से दग्ध हौं, सीतल करौ मिलाइ॥
अब बिलम्ब जनि कीजिये, शीघ्र मिलावो जाइ।
बदला इस उपकार के, मोको कछु न दिखाइ॥

श्रीप्राणप्रीतम जू—

हे श्रीचन्द्रकले! अब मैं आपके बचन से जान गया कि मेरे भ्रमण कराने वाली यह सब माया आपही की है। अब मेरे ऊपर दया करके श्रीप्राणप्रियाजी को बता दीजिये। मैं बिरहाग्नि से जल रहा हूं। श्रीप्राणप्रियाजी से मिलाकर शीतल

करें। जो आप श्रीप्राणप्यारीजी से मुझे मिलायेंगी, उस उपकार के बदले, मेरे पास देने योग्य कुछ भी नहीं दिखाता। इससे मैं आपके अधीन हूं।

❋ व्यास गान दोहा ❋

बोली चन्द्रकला तबै, सुनिये प्रान अधार।
प्रान पियारी मान गहि, बैठी है पट डार॥
तव कृत अति अपराध से, प्रिया कोप समलान।
तुष्ट होव तेहि कठिन है, जतन किये बहुतान॥
तौभी मैं तोहि प्रानपति, प्रिया मिलावन हेत।
जतन करब बहु भाँति से, जनि करु चिन्ता चेत॥
मेरे मन विश्वास है, मम वच सुनि सुकुमारि।
तोहि तुरत मिलिहैं सुघर, गाढ़ालिंगन धारि॥
पै प्यारे सुनु आज से, अस कर्त्तव्य न तोहि।
जेहि से हम सब को बिरह, प्रान हरन सम होहि॥
ताते चलिये शीघ्र पिय, छमा माँगिये आप।
जाते अस फिर होय नहिं, राउर सिर सन्ताप॥

श्रीचन्द्रकलाजी—

हे श्रीप्राणवल्लभ जू! आपकी प्राणप्रिया जू परदा डालकर मान को धारण किये मान महल में बैठी हैं। आपके किये हुये अपराधों से अत्यन्त क्रोधित और मलान हैं। आपके अनेक प्रकार से यत्न करने पर भी शान्त होना दुर्लभ दिखाई

पड़ता है। तौभी मैं आपको श्रीप्राणप्रिया जू के साथ मिलाने के लिये सब प्रकार से यत्न करूंगी। आप चिन्ता न करें। मेरे मन में यह निश्चय है कि मेरी प्रार्थना पूर्ण बात सुनते ही आपकी प्रिया जू आपके साथ गाढ़ालिंगन पूर्वक मिलेंगी। परन्तु आज से आप ऐसा कर्त्तव्य न करें, जो हम सबों को बिरह उत्पादन कर प्राणान्तक क्लेश देवे। अब मेरे साथ शीघ्र चलिये और अपनी प्राणप्रिया जू से क्षमा मांगिये, जिससे पुनः आगे भी आपके सिर पर संताप न आवे।

❋ व्यास गान दोहा ❋

अस कहि पिय कर कमल को, निज कर प्रमुदित धारि।
आई बैठी मान गहि, जहँ मिथिलेस कुमारि ॥
आवत देखी प्राण पति, बैठि अधोमुख जोय।
नख से पृथ्वी पै लिखति, मौन रोष युत होय ॥
यह लखि राजकुमार अति, सोक समाकुल होय।
प्रिया पानि निज पानि गहि, बोले सिय मुख जोय ॥
हे करुना रस रूपिनी, छमा सील सुख सार।
छमा करहु अपराध सब, दुस्तर करब हमार ॥
अथवा दंडहि देहु मोहि, जो कछु सुरुचि तुम्हार।
अथवा कुच अग्रांकुशे, ताडहु वक्ष हमार ॥
हे सरनागत वत्सले, सरनागत ध्वनि कान।
सुनि के मोहि सन्तुष्ट करु, अधरामृत दै दान ॥

राउर दसा विलोकि कै, बिकल होत मम प्रान।
उठु उठु मम रच्छा करहु, मम जिय अति घबरान ॥

श्रीप्राणप्रीतम जू—

हे करुणेश्वरी! हे क्षमाशीले! मेरे दुस्तर अपराध को क्षमा कर, मेरे ऊपर करुणा करो। अथवा इस अपराध के बदले जो कुछ दण्ड देना हो, वह माधुर्य रसानुकूल करो। हे शरणागत वत्सले, मेरी आरतमयी वाणी सुनकर, अपना अधरामृत देकर मेरे बिरह ज्वलन को शांत करो। हे प्राण-प्रिये, आपकी ऐसी दशा देखकर, मेरे प्राण बिकल हो रहे हैं। अतएव आप उठिये, मैं अतिशय घबड़ाहट को प्राप्त हो रहा हूं।

※ व्यास गान दोहा ※

श्रीमिथिलेस कुमारि सुनि, विह्वल पिय प्रिय बानि।
करुना पूरन हिय भई, मिलन पियहि अतुरानि ॥
सिय हिय माखन सम मृदुल, पिय दुख द्रुत अधिकान।
सखी बचन बन्धन पड़ी, हिय अतिशय अकुलान ॥
तब नयनों से प्रेरती, क्यों न कहो सखि हाल।
नहि तो मैं उठि मिलति हौं, मोते अब न सँभाल ॥
प्यारी मन की जानि कै, सखि मन में ठहराय।
नहीं वदौं यदि शीघ्रतर, तौ पिय से मिलि जाय ॥
गौरव रच्छा हेतु सो, दच्छा भानु कुमारि।
बोली मानिय बिनय मम, श्रीमिथिलेस दुलारि ॥

देवि देखु तब पिय खड़े, सन्मुख दीन मलान।
हाथ जोर जाँचत तुम्हें, मुख दिखाउ हर्षान ॥
पिय अपराध बिसारि के, उठि मिलिये सब अंग।
पुनि पिय अस नहिं करहिंगे, मानि रसिये रस रंग ॥

श्रीसर्वेश्वरी जू—

हे श्रीप्राणप्यारी जू ! मेरी प्रार्थना आप श्रवण चित्त देकर सुनिये। आप नयन उठाकर देखिये। आपके श्रीप्राण-वल्लभ जू अत्यन्त दीन होकर हाथ जोड़े आपके आगे खड़े हैं। आपका प्रफुल्लित मुख कमल अवलोकन की याँचना करते हैं। आप अपने प्राणनाथ के अपराध को क्षमाकर उठिये। उनके सब अंगों से अंग मिलाकर उन्हें आनन्द दीजिये। अपनी भूल स्वयं क्षमा कराते हैं। पुनः आपके प्राणप्रीतम ऐसा कर्त्तव्य नहीं करेंगे। यह मेरा प्रार्थना युक्त बचन है।

* व्यास गान दोहा *

मन भावन प्रिय वचन सुनि, चन्द्रकला मुख द्वार।
अंकमाल दोउ भुजन दै, बैठाई सतकार ॥
पुनि बोली कुटिलेक्षणा, निठुर भये कस स्याम।
जैसे स्यामल गात हैं, मानस हूँ तस स्याम ॥
वंसी वाद्य बजाइ कै, मोहि जीतन अभिलाष।
पुनि अस कबहुँ न कीजियो, वचन हिये में राख ॥

श्रीप्रिया जू—

हे श्रीप्राणप्रीतम जू ! आपने इस प्रकार की निठुराई धारण की, जो हम सबों को अत्यन्त दुःख दायिनी हुई। यथार्थ है. जैसा आपका श्यामल शरीर है, वैसा ही आपका मानस भी है। क्या आपने वंशी बजाकर मुझको जीतने की अभिलाषा की थी ? देखिये, अब ऐसा कभी नहीं करियेगा। मेरे इस बचन को हृदय में रखियेगा।

* व्यास गान दोहा *

ऐसा कहि श्री मैथिली, नयन प्रफुल्लित अंग।
आलिंगन करि प्रान प्रिय, चुम्ब अधर मधुरंग॥
हिय से हृदय मिलाइ के, मुख हूं मुख में मेल।
उरु कर कटि सब अंग मिलि, दोउ नाना रस भेल॥
दम्पति कौतुक देखि कै, सखियन सुख न अमात।
जय जय सब्द उचारहीं, अंग अंग पुलकात॥
भोज्य भक्ष्य आलेह्य पुनि, षट रस चार प्रकार।
लै आई सखि साज कै, दोउन आगे धार॥
करि भोजन एक संग में, अरु सरजू पय पान।
अचवन सविधि कराइ सखि, दुहुँ मुख में दै पान॥
नासा अतर सुँघाइ कै, दर्पन दोउ दरसाय।
आरति करि वारति विविध, दुहुँ पै बलि बलि जाय॥

(युगलकिशोर परस्पर सर्वाङ्ग से मिलते हैं। सखियाँ जय जय शब्द उच्चारण करती हैं। युगल मनभावन को भोग अर्पण करती हैं। आचवन कराती हैं। पान पवाती हैं, इत्र सुंघाती है। दर्पण दिखाती है, पुनः आरती उतार कर विविध भाँति का निछावर करती हुई बार बार बलैया लेती हैं।)

❀ *नीचे लिखे पद सखियाँ गान करेंगी तथा नृत्य करेंगी* ❀

महा रस भीनी रंग भरी जोरी।

सिय अनुराग पगे पिय सुन्दर, पिय सिय रागनि बोरी ॥
सियकी मया बिचारत घूमै,पियकी रहसि समुझि मन भोरी।
मिली स्यामता गौर जुगल तन, मृगमद केसरि घोरी ॥
छविकी छटा घटासी उमड़ी,दमकनि दामिनि हँसनि मनोरी।
रस आनन्द मधुर झर इक रस, सखि मन भर सर सो री ॥
गरभुज माल सुलाल लड़ावति,अली लड़ावति प्रिय लड़कोरी
कृपा निवास श्रीजानकि वल्लभ,मो हिय ते न टरो री ॥१॥

सुन्दर सुभग सलोनी श्री सिय,
स्याम वाम अँग लसियाँ ।
जनु घन मण्डल विसद दामिनी,
दमक राम सिय रसियाँ ॥
करत किलोल लोल ललना मनि,
लाल गरुव गर गसियाँ ।

कृपानिवास छवि रास विलासिनि,
मंद हास मृदु हँसियाँ ॥ २ ॥

मोहत मन मनसिज सरकारी,
राम रसिक प्यारी अँखियाँ ।
निसित भाल हियरे गड़ि बाहिर,
लसति पलक पखियाँ ॥
करकै उठति नेंह की सरकै,
गर गसि हँसि लखियाँ ।
कृपानिवास भरे गुन इन के,
जिन के लगि चित चाहनि चखियाँ ॥३॥

सुभग सिंहासन आसन नव छवि, नवल किसोर किसोरी ।
राम स्याम घन मूरति मानो, तड़ित सिया तन गोरी ॥
ललित विभूषन लसन वसन तन, उपमा तनक टटोरी ।
मनहुँ सकल सुभचिंतक त्रिभुवन, तिन की आस उदोरी ॥
सारीफर कर ले दृग सों दृग, प्रान एक द्वै गोरी ।
नभ में पवन पवन ज्यों नभ में, चंद्र चंद्रिका सोरी ॥
गान केलि कौतुक सखि उघटति, रिझवति हेत विभोरी ।
मनहुँ उभय रस सिन्धु लहर सी, लहरति सुथल करोरी ॥
लाल लड़ावत लाल लाडली, लाड पाल लडकोरी ।
कृपानिवास श्रीजानकि वल्लभ, मो हिय ते न टरो री ॥४॥

पिय के नैन प्रिया छवि उरझे,
सिय दृग पिय छवि लागे ।
मनु द्वै रूप सरोवर मीनन,
सदन पलटि सुख रागे ॥
प्रीतम प्रान बसै प्यारी बस,
प्यारी पिय के आगे ।
कह लालन मैं सर्वस तुम्हरो,
मैं तुम्हरी बड़ भागे ॥
तुम्हरी मया बड़ भाग विलासिन,
बिलसहुँ सुख मन माँगे ।
लाल रावरो हित सु अमोलक,
मन सब हेत न त्यागे ॥
तुम सों लाल निहाल चरन लगि,
मानो भाग सुभागे ।
राज रावरी वस्तु प्रान तन,
पगे रहो जिमि पागे ॥
यह सुख सुधा सदा कोइ पीवै,
कोइ भूलै बिष दागे ।
कृपानिवास प्रसाद स्वाद सो,
प्यायो जन निसि जागे ॥ ५ ॥

सदा चिरजीवो रँग भरी जोरी ।
सदा बिहार करो रँग मन्दिर, रंग किसोर किसोरी ॥

सदा सुहागिनि के अनुरागनि, रँगे रहो बड़भाग बढ़ो री।
पिय के प्रान बसो सिय सुन्दरि, सिय मन स्याम बसो री॥
पियकी चाह सुचात्रिक लौं रहो, सियकी मया स्वाति बरसोरी
सिय मुख चन्द्र सुधा रस द्रवो नित, पिय की आँखि चकोरी॥
हमरे नयन प्रानको सवस, अधिक अधिक सुख रस सरसोरी।
कृपानिवास उपास महल की, टहल लगी सो लगो री॥६॥

*** व्यास गान दोहा ***

(युगलकिशोर का अन्दर प्रवेश ! यवनिका पतन)

पुनि दोउ गये निकुंज में, सखियन परदा डार।
रति सुख में दोऊ पगे, वह नहिं वाहर प्रचार॥
यह सुख अगम अलख्य है, दम्पति मधुर विलास।
यदि होवै रसिकन कृपा, तब 'रसमोद' प्रकास॥

इति श्रीमती रसमोद लता ग्रथित श्रीप्रिया प्रियतम
रसमोद माला सम्पूर्णम। शुभं भूयात्॥

प्रेस श्री अयोध्या